सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-9 7 से 21 मई, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

देशभर में मनाया गया एसयूसीआई(सी) का 64वाँ स्थापना दिवस

24 अप्रैल–एसयूसीआई(सी) का 64वाँ स्थापना दिवस देशभर में जोश-खरोश के साथ मनाया गया। सभी जगह सभा सर्वहारा के महान नेता और पार्टी के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण व उनपर रचित गान से शुरू हुई और अन्तर्राष्ट्रीय गान के साथ समाप्त हुई।

दिल्ली : एसयूसीआई(सी) के 64वें स्थापना दिवस के अवसर पर पार्टी की दिल्ली राज्य कमेटी के तत्वावधान में 24 अप्रैल को दिल्ली में बुराड़ी चौक पर जनसभा आयोजित की गई। सभा में इलाके के सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। सभा में मुख्य वक्ता थी एसयूसीआई(सी) की केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. छाया मुखर्जी। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉ. प्राण शर्मा ने की। सभा को एसयूसीआई (सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल व राज्य कमेटी सदस्य कॉ. मैनेजर चौरसिया ने भी संबोधित किया।

कॉमरेड छाया मुखर्जी ने कहा कि क्रान्ति चाहिए क्योंकि देश की जनता आजादी के इतने अर्से बाद भी गरीबी, भुखमरी की शिकार है। महंगाई, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार का बोलबाला है। इलाज का सही इन्तजाम नहीं है। लोगों को शिक्षा से वंचित किया जा रहा है। दिन पर दिन बढ़ती जा रही इन सब समस्याओं से मुक्ति के लिए एकमात्र रास्ता है क्रान्ति और क्रान्ति कभी नहीं हो सकती अगर हम क्रान्तिकारी पार्टी को मजबूत न करें। 1948 से पहले भारत में कोई क्रान्तिकारी पार्टी, सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं थी। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि मार्क्सवाद का नाम लेकर देश में जो कम्युनिस्ट नामधारी पार्टी थी वह मार्क्सवाद की बात तो करती थी लेकिन जिस तरह की पार्टी बनाने से एक देश में क्रान्ति हो सकती है उस तरह की पार्टी अविभाजित सीपीआई नहीं बन पायी। क्रान्तिकारी संघर्ष भी वह संचालित नहीं कर पायी। इसलिए कॉमरेड शिवदास घोष ने एक सही क्रान्तिकारी पार्टी बनाने का संघर्ष छेड़ा। उन्होंने तमाम तरह की दिक्कतों, दुख-तकलीफों व बाधाओं का सामना करते हुए 24 अप्रैल 1948 को एसयूसीआई(सी) की स्थापना की। पार्टी के संस्थापक जनरल सेक्रेट्री कॉ. शिवदास घोष के सतत और कठिन संघर्ष का जिक्र करते हुए कॉमरेड मुखर्जी ने बताया कि पार्टी का निमार्ण करते समय बहुत लोगों ने यह कह कर उन्हें हतोत्साहित करने की कोशिश की कि आप मुठ्ठीभर नौजवान क्रान्तिकारी पार्टी बनाने का सपना देख रहे हो, इस तरह पार्टी नहीं बनती है। पार्टी बनाने के लिए किसी की बैकिंग होनी चाहिए, पैसा चाहिए जो आप के पास कुछ है नहीं। आपकी राजनैतिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि भी नहीं है जिससे कि आप पार्टी बना सकें। शुभचिन्तकों ने कहा कि जो पहले से मौजूद पार्टी है, क्रान्ति करना चाहती है आप उसमें शामिल हो जाइये। आपकी जो क्षमता है उससे

दिल्ली में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड छाया मुखर्जी

आप नेता बन जायेंगे आपको और क्या चाहिए। कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा कि इस तरह नेता बन कर देश में क्रान्ति नहीं लाई जा सकती। क्रान्ति के लिए सही क्रान्तिकारी पार्टी चाहिए और वह सही क्रान्तिकारी पार्टी बनाने के लिए चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ सहनी पड़ें, कितनी ही कुर्बानियाँ देनी पड़ें मुझे क्रान्तिकारी पार्टी का निर्माण करना ही होगा। लोगों ने कहा कि इस तरह तो आप सड़क के किनारे भूखे मर जायेंगे। उन्होंने जवाब में कहा कि अगर भूखा भी मरना पड़ा तो मैं समझुंगा कि मेरे जैसे एक क्रान्तिकारी को देश में क्रान्ति करने के लिए सड़क के किनारे मरना ही जरूरी था। अगर मरने से पहले सड़क के किनारे क्रान्ति की एक ईट रख पाया तो आने वाले क्रान्तिकारी उस ईट पर ईट रखते हुए क्रान्ति की मंजिल बनायेंगे। इस तरह का दृढ़ सकंल्प लेकर वे चले थे। अभी वक्ताओं से आपने सुना कि देश के 22 राज्यों में पार्टी का संगठन बन चुका है। पार्टी मजबूत हुई है। कॉमरेड घोष क्रान्ति की सिर्फ एक ईट रख कर ही नहीं गये बल्कि क्रान्ति की मंजिल भी बना कर गये। पार्टी का निर्माण करके गये। राज्य-राज्य में पार्टी का संगठन फैलता जा रहा है। पार्टी बढ़ रही है।

सिंगुर-नंदीग्राम के गौरवशाली संघर्षों का जिक्र करते हुए कॉमरेड मुखर्जी ने कहा कि इस पूँजीवादी समाज में आम आदमी शोषित-पीड़ित है। जनता शोषण से मुक्ति चाहती है। जन जीवन की ज्वलन्त समस्याओं को लेकर पार्टी आन्दोलन संगठित कर रही है। केवल जन आन्दोलन के जरिये ही इन समस्याओं से कुछ राहत मिल सकती है। पार्टी शोषित-पीड़ित जनता को संगठित करते हुए, उनकी जन कमेटियाँ बनाते हुए संघर्ष गठित करना चाहती है। जहाँ-जहाँ हम ऐसा कर पाये वहाँ-वहाँ माँग हासिल करने में हमें सफलता भी मिली है। किसानों से जमीन छीन कर सीपीआई(एम)-नीत पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा सिंगुर में टाटा को और नंदीग्राम में सालीम समूह को दे दी गई थी। किसान जमीन देना नहीं चाहते थे। वहाँ किसानों की संघर्ष कमेटियाँ बना कर विरोध हुआ। किसानों के संघर्ष के चलते टाटा सिंगुर में कार बनाने का

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भ्रष्टाचार की दलदल में भारतीय सेना

भारत के मौजूदा थलसेना प्रमुख ने आरोप लगाया है कि सेना भ्रष्टाचार में आकण्ठ डुबी हुई है। अक्सर जैसा कि होता है सरकार की तरफ से सभी आरोपों को सिरे से नकार दिया गया है। लेकिन 19 अप्रैल के समाचारों में देखा गया कि वेक्ट्रा कम्पनी के टाट्रा ट्रक खरीदने के बारे में भ्रष्टाचार की जाँच करने के सिलसिले में कम्पनी के एक अधिकारी के घर व सेवानिवृत ब्रिगेडियर पीसी दास और नोएडा में सेवानिवृत्त कर्नल अनिल दत्त के घर की तलाशी खुफिया पुलिस द्वारा ली गई है।

घटना की शुरूआत थलसेना प्रमुख वीके सिंह के एक आरोप से हुई। उनका आरोप था कि पूर्व सेना गुप्तचर प्रमुख तेजिन्द्र सिंह ने 600 घटिया क्वालिटी के ट्रक खरीदने के लिए 2010 में उन्हें 14 करोड़ रुपये की घूस देने की पेशकश की थी। वेक्ट्रा समूह के इन ट्रकों को पब्लिक सेक्टर संस्था भारत अर्थ मूवर्स लिमिटिड(बीईएमएल) के जरिये प्रतिरक्षा विभाग खरीदता है। 1986 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के शासनकाल में यह समझौता हुआ था। तब से ही सेना में टाट्रा ट्रकों की खेप सप्लाई हो रही है। एकाधिकार की तरह ये ट्रक सेना में सप्लाई हो रहे हैं। यह सवाल उठने पर इंग्लैण्ड आधारित वेक्ट्रा समूह के चेयरमेन रवि ऋषि ने पत्रकार सम्मेलन करके बता दिया कि उनका और कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है। अत: पब्लिक सेक्टर कम्पनी बीईएमएल के प्रमुख वीआरएस नटराजन ने स्वीकार कर लिया है कि कोई टेण्डर जारी करके या प्रतियोगिता के जरिये इन ट्रकों को खरीदा नहीं गया है या खरीदा नहीं जा रहा है। वीके सिंह ने आरोप लगाया है कि अब तक जो 7000 ट्रक वेक्ट्रा ने सप्लाई किये हैं। वे बहुत ही घटिया क्वालिटी के हैं। 2008 में जबलपुर के सांसद राकेश सिंह ने रक्षा मंत्री को आरोप पत्र दिया था कि जबलपुर के रक्षा विभाग की खुद मोटरगाड़ी बनाने वाली संस्था के कारखाने से ट्रक क्यों नहीं खरीदे जा रहे हैं। इसकी वजह से सरकार को 3000 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। सेना प्रमुख ने भी जबलपुर कारखाने से ट्रक खरीदने की बात करते हुए कहा है कि प्रत्येक टाट्रा ट्रक की कीमत जहाँ 65 लाख रुपये है वहीं देशी कारखाने में बने ट्रक के दाम सिर्फ 30 लाख रुपये हैं। लेकिन इसके बावजुद देशी ट्रक क्यों नहीं खरीदे जा रहे हैं? बैंगलोर के कांग्रेसी मजदूर नेता डी हनुमंथप्पा का आरोप है कि टाट्रा ट्रकों की खरीद के मामले में कानून की धज्जियाँ उड़ाना और घूस लेने की बात जानने के बाद 2009 में प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री को उन्होंने चिट्ठी लिखी थी। रक्षा मंत्रालन को भी इस चिट्ठी की प्रति मिली थी। लेकिन तीन साल हो चुके कुछ भी कार्रवाई नहीं हुई। कांगेस या बीजेपी चाहे कोई सी भी पार्टी सत्ता में क्यों न रहे रक्षा दफतर और सरकारी संस्था की इस भूमिका को लेकर उन्होंने कभी भी कोई सवाल नहीं उठाया। मौजूदा सेनाध्यक्ष के आरोप के आधार पर सीबीआई ने जो जाँच शुरू की है, उसमें कहा गया है कि शुरूआत में चैकोस्लाविया के विदेश वाणिज्य विभाग के साथ सैन्य युद्धक विमानों को लेकर कोई समझौता हुआ था। लेकिन जालसाजी करके इंगलैण्ड आधारित वेक्ट्रा समूह के साथ 1991 में एक समझौता किया गया। आरोप है कि यह समझौता सिर्फ तीन दिन में सम्पन्न हो गया। सीबीआई कह रही है कि करोड़ों रुपये के कमिशन के एवज में ये चीजें खरीदी जा रही हैं। साथ ही साथ ट्रक खराब हो जाने पर हटाने की जिम्मेदारी वेक्ट्रा कम्पनी द्वारा लेने की बात थी जो

(शेष पृष्ठ 5 पर)

24 अप्रैल–...

(पृष्ठ 1 का शेष)

कारखाना लगा नहीं पाया। उसे वहाँ से भागना पड़ा। संघर्ष को दबाने के लिए सीपीआई(एम)–नीत सरकार ने लोगों पर जघन्य अत्याचार किये, लाठियाँ बरसाई, उनको गोलियों से भून दिया, माँ–बहनों पर अत्याचार किये। एक 17 साल की लड़की को बलात्कार करके जला कर मार डाला गया। इसके बाद नंदीग्राम में जबरन भूमि अधिग्रहण के खिलाफ हमारी पार्टी के नेतृत्व में किसान संघर्ष समिति बना कर संघर्ष हुआ जिसके चलते वहाँ सेज बनाना सम्भव नहीं हुआ। जबकि संघर्ष को कुचलने के लिए तथाकथित वामपंथियों की सरकार ने पुलिस बल के सहारे अनेक लोगों को मार डाला, माँ–बहनों पर अत्याचार किये, सामूहिक बलात्कार करवाये। पुलिस बल के सहारे सीपीआई(एम) की गुण्डावाहिनी जिस हरमदवाहिनी नाम दिया गया, उसने महिलाओं से बलात्कार किये। इतने जघन्य अत्याचारों के बावजूद आन्दोलन को कुचला नहीं जा सका। संगठित सचेत जनशक्ति के सामने सरकार को झुकना पड़ा। संघर्ष की जीत हुई। यह इतिहास मैं इसलिए दोहरा रही हूँ कि अगर संघर्ष हम इस तरह करें तो किसी भी अत्याचारी सरकार की हिम्मत नहीं होगी कि हमसे जमीन छीन ले या हमारी जो माँगें हैं वे पूरी न करे। जन आन्दोलन हमें इस तर्ज पर खड़ा करना पड़ेगा।

हमारी पार्टी देश भर में जनता की जायज माँगों को लेकर संघर्षरत है। संघर्ष में जीत भी हासिल करती जा रही है। गरीब परिवारों के छात्र बहुत महंगी शिक्षा होने के कारण पढ़ नहीं पाते हैं। इसके खिलाफ संघर्ष करके कई जगह हम बढ़ी हुई फीस को कम करा सके। हमारे छात्र संगठन एआईडीएसओ के नेतृत्व में यह संघर्ष हुआ और माँग हासिल हुई। हस्पतालों में व्याप्त भ्रष्टाचार व बदइन्तजामी के खिलाफ हस्पताल और जन स्वास्थ्य बचाओ कमेटी बना कर पश्चिम बंगाल में, खासकर हमारी पार्टी के नेतृत्व में संघर्ष हुआ। जनता को जो मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है–इसके खिलाफ संघर्ष करके बहुत कुछ हासिल किया है और अभी भी संघर्ष जारी है। माँ–बहनों पर बढ़ते जा रहे अत्याचारों के खिलाफ हमने आवाज उठाई। हमारे महिला सांस्कृतिक संगठन के नेतृत्व में महिलाओं को संगठित करके संघर्ष से बहुत जगह हमने माँगें पूरी करवाई हैं। अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाई है। इसी तरह किसानों की फसलों के वाजिब दाम नहीं मिलते, मजबूरीवश सस्ते में अपनी फसलें बिचौलियों को बेचनी पड़ती हैं और उनसे फिर वही चीजें ऊंचे दामों पर खरीदनी पड़ती हैं। पूँजीपतियों द्वारा किसानों की फसलों की चल रही इस लूट के खिलाफ, उनपर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ हमारा कृषक खेतमजदूर संगठन लगातार लड़ रहा है।

इस पूँजीवादी समाज की भयंकर स्थिति दर्शाते हुए कॉमरेड छाया मुखर्जी ने कहा कि इस पूँजीवादी समाज को हम पूँजीवाद–विरोधी समाजवादी क्रान्ति की चोट से जितना जल्दी उखाड़ फेंक कर शोषणहीन एक नया समाज, समाजवादी समाज कायम कर पायेंगे उतनी ही जल्दी हम जनता को इस शोषण–अत्याचार से बचा पायेंगे।

रांची(झारखण्ड) : 24 अप्रैल –पार्टी स्थापना दिवस झारखण्ड में मर्यादा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर राज्य की राजधानी रांची में ऑल इण्डिया वीमेन्स हाल में 25 अप्रैल को एक सभा आयोजित हुई। सभा की अध्यक्षता पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड रबिन समाजपति ने की। मंच पर उपस्थित थे राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉमरेड्स के.पी. सिंह, आर.एस. शर्मा, सिद्धेश्वर सिंह, विमल दास, सीताराम टुडु, रामलाल महतो व सुमीत राय। मुख्य वक्ता थे पार्टी के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रणजीत धर।

सबसे पहले कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान गाया गया। उसके बाद कॉमरेड रबिन समाजपति ने वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि झारखण्ड में जनता प्रचूर सम्पदा की अधिकारी होते हुए भी सब सुख–सुविधाओं से वंचित है। राजनैतिक हलकों में चुनावों को केन्द्रित करके करोड़ों रुपयों का खेल चल रहा है। प्रमोटरों, पुलिस, अपराधियों और राजनेताओं द्वारा मिल कर गरीबों की बस्तियों को उजाड़ने का कुचक्र रचा जा रहा है। आदिवासियों और गैर आदिवासियों को आपस में लड़वाने का सुनियोजित प्रयास किया जा रहा है। इसके खिलाफ एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) केवल अपने खुद के बलबूते पर लड़ाई लड़ रही है। इसे आम लोगों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। अब हमारा काम है काम करने की पुरानी शैली को बदल कर नई शैली अपना कर खुद को बदल डालना। एक काम करके दो दिन आराम करने की आदत हमें बदलनी होगी।

कॉ. रणजीत धर ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज पूँजीवाद का संकट सब क्षेत्रों में व्याप्त है। जिस तरफ भी देखो, हाहाकार मचा हुआ है। शिक्षा के दरवाजे आम आदमी के लिए बंद हैं। उपयुक्त इलाज आज लोगों को मिल नहीं पा रहा है। देश में भयंकर बेरोजगारी छायी हुई है। नौकरी मिलती नहीं है। चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं। माताएं अपने कलेजे के टुकड़े अपने लाल को बेचने पर मजबूर हो रही हैं। सबसे बड़ा संकट सांस्कृतिक क्षेत्र में है। घोर व्यक्तिवाद का बोलबाला है। इससे यह मानसिकता बन गई है कि सिर्फ अपना अपना सोचो, दूसरों या पड़ौसियों से सरोकार रखना तो दूर की बात, यहाँ तक कि अपने परिवार से भी सरोकार नहीं रखना। यह घोर खुदगर्जी है। इसलिए कहीं सुख–शान्ति भी नहीं है। इस सब की वजह है पूँजीवाद। जब तक पूँजीवाद रहेगा तब तक ये समस्याएं और भी घनघोर व जटिल रूप लेती जाएंगी। इसलिए इन हालात को हमें बदलना चाहिए। सिर्फ सरकार बदलने से ही ये समस्याएं हल नहीं होंगी। एकमात्र क्रान्ति होने से ही ये हल होंगी। लेकिन हमें क्रान्ति चाहिए–सिर्फ यही चेतना ही कोई क्रान्तिकारी चेतना नहीं है। हमें क्रान्ति चाहिए इसका ठोस मायने है मजदूर वर्ग की जो पार्टी क्रान्ति कर सकती है उस पार्टी को मजबूत करने की भरसक कोशिश करना। लेनिन ने कहा था कि क्रान्तिकारी पार्टी के बिना कोई क्रान्ति नहीं हो सकती। हमें गर्व है कि हम में से हरेक ऐसी एक सही क्रान्तिकारी पार्टी का सेनानी है। कुछ मुठ्ठीभर सहयोद्धाओं को लेकर कॉमरेड शिवदास घोष अथक साधना करते हुए अपने हाथों से एक असल क्रान्तिकारी पार्टी गठित कर गये हैं। कॉमरेड

रांची में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड रणजीत धर

शिवदास घोष का चिन्तन आज न केवल देश के विभिन्न प्रांतों में बल्कि विदेशों तक में भी फैलता जा रहा है।

आज के विशेष दिन हम यह मूल्यांकन करते हैं कि हम अपने आपको कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के आधार पर कितना बदल पाये हैं। आप में से बहुत सारे लोग 14 मार्च को दिल्ली में हुई ऐतिहासिक रैली में गये थे। इतनी विशाल और अनुशासित रैली अब तक किसी वामपंथी पार्टी ने नहीं की है। देश के विभिन्न हिस्सों से हजारों हजार लोग अपना प्रतिवाद जताने के लिए चले आये थे। सभी ने निश्चय ही गौर किया होगा कि इस प्रतिवाद की भाषा कुछ दूसरी ही तरह की थी। इस रैली से प्रेरित होकर आज चारों तरफ जन आन्दोलन खड़े करने होंगे। समस्याओं का कोई अन्त नहीं है। गर्मियाँ शुरू हो गई हैं। चारों तरफ पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है। राह–घाट जर्जरित हैं। नाले साफ नहीं हैं। नालियों में कीचड़ भरा पड़ा है। बीमारियाँ फैल रही हैं। इलाज और शिक्षा के मामले में घोर सरकारी उदासीनता बरती जा रही है। इन सब बातों को लेकर ब्लॉक लेवल से आन्दोलन छेड़ें। लेकिन इसके साथ–साथ कॉमरेड शिवदास घोष की दो चार मूल्यवान बातें आप जरूर ध्यान में रखें।

पहली है–हमें सर्वहारा संस्कृति अपनानी होगी। चाहे कितना भी कष्ट क्यों न हो, हमें सामूहिक जीवन, सामूहिक काम–कार्रवाई, सामूहिक चिन्तन पद्धति अपनानी होगी। प्यार–प्रेम–प्रीति, बेटा–बेटी के प्रति दृष्टिकोण आदि सभी मामलों में हमारे दृष्टिकोण में सर्वहारा संस्कृति प्रतिफलित हो रही है या नहीं–यह देखना होगा।

दूसरी है–आचरण विधि मान कर चलना है। हम जनवादी केन्द्रीयता को मानते हैं। यानी पार्टी बॉडी या कमेटी में अपना मत प्रकट करने की हमें जहाँ पूरी आजादी है वहीं केन्द्रीयता भी है। मान लीजिए मीटिंग में बहुमत जिसे ठीक मानता है उसकी बात मान कर चलने का फैसला हुआ है लेकिन किसी कॉमरेड की बात क्योंकि मानी नहीं गई इसलिए उसका मन खराब हो जाता है। ऐसा क्यों होगा? यह क्या कोई क्रान्तिकारी मानसिकता हुई? यह तो अति जनतंत्र है। इस तरह क्या एक मोनोलीथिक पार्टी चल सकती है? इसके अलावा एक और घातक रुझान है, वह है पार्टी बॉडी से बाहर खुसरफुसर करना।

तीसरी है–कॉमरेडों के बीच सम्पर्क द्वन्द्वात्मक होना चाहिए। अंधतापूर्ण आचरण से मुक्त होना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी नेतृत्व के यांत्रिक सम्बन्ध के कुछ पहलुओं के बारे में कॉमरेड शिवदास घोष ने 1948 में ही आगाह किया था। बाद में उस तरह के सम्बन्ध का जो बुरा अंजाम हुआ उससे जाहिर है कि उनकी बात कितनी सच निकली।

चौथी है–हमेशा हम दूसरों के दोष ढूँढ़ते फिरते हैं। यह ठीक नहीं है। सभी आदमी गुण–दोष लेकर हैं। ऐसा कोई नहीं है जिसने जीवन में कभी कोई गलती नहीं की हो। लोगों के गुणों को बढ़ाते जाने से उसके दोष अपने आप कम हो जायेंगे।

आज हमारे पास सुनहरा मौका है। तमाम राजनैतिक पार्टियाँ आज बेनकाब हो चुकी हैं। कांग्रेस, बीजेपी, आरजेडी, सपा, जेएमएम, यहाँ तक कि सीपीएम–सीपीआई जैसी नकली कम्युनिस्ट पार्टियाँ भी आज जनता से अलग–थलग पड़ चुकी हैं। ये अब पूँजीवाद की दलाली कर रही हैं। नंदीग्राम–सिंगुर के लोगों ने सीपीएम का नंगा रूप देखा है। इसके अलावा, माओवाद का नाम लेने वाली दो चार पार्टियाँ हैं जो जंगलों में, पहाड़ों पर रहती हैं। आम आदमियों से इनका कोई सम्पर्क नहीं है। जबकि देखिये, माओवाद नाम की कोर्द चीज नहीं होती। समाजवाद के युग में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के आधार पर क्रान्ति होगी। माओ ने उनके अपने देश में क्रान्ति करते हुए मार्क्सवाद के ज्ञान भण्डार को और भी समृद्ध किया है। इसलिए हम कहते हैं माओ का चिन्तन वैसे ही जैसे कॉमरेड शिवदास घोष का चिन्तन कहते हैं। आज अगर हम कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के आधार पर अपना नव निर्माण कर सके तो फिर क्रान्ति दूर नहीं है।

सूरत(गुजरात) : पार्टी के 64वें स्थापना दिवस पर गुजरात के सूरत शहर में उधना रेलवे स्टेशन से एक जुलूस निकाला गया जिसमें भारी संख्या में मजदूरों, छात्र–नौजवानों व महिलाओं ने भाग लिया। पावरलूमों, एम्ब्राइडरी, डायमंड, गारमेंट्स आदि में काम करने वाले मजदूरों की घनी बस्तियों से होता हुआ जुलूस

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सूरत में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. छाया मुखर्जी

अग्नि-5 : किसकी सुरक्षा, कैसी सुरक्षा

11 अप्रैल को अग्नि-5 के प्रक्षेपण पर प्रधानमंत्री और कांग्रेस-बीजेपी के नेताओं ने बड़ी खुशी जाहिर की। सीपीआई(एम)-सीपीआई भी खुशी से फूली नहीं समायी। आनन्द विभोर होकर संवाद माध्यमों ने लिखा कि 'चीन और पाकिस्तान सहित पूरे एशिया और अफ्रीका-यूरोप का एक बहुत बड़ा हिस्सा भारत की मिसाइल की जद में आ गया है। एक नये युग की शुरूआत हुई है।' यह मिसाइल 5 हजार किलोमीटर के दायरे में निशाने की किसी भी चीज पर अचूक मार करने में सक्षम है। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, चीन, फ्रांस के बाद भारत के पास ही यह हथियार है।

लेकिन देश के आम लोग क्या इस हर्षोन्माद में शामिल हो सकते हैं? उनके मन में बल्कि यह सवाल बार बार कौंधता है कि इतने भारी खर्च से इस मिसाइल को बनाने से देश के करोड़ों करोड़ समस्याग्रस्त आम लोगों को क्या फायदा है? देश के नेता देश की सुरक्षा की दलील दे रहे हैं। अब तक यह हथियार नहीं रहने पर भारत को किस से खतरा हुआ? भारत का शासक पूंजीपति वर्ग हमेशा ही अपना प्रतिरक्षा बजट आवंटन बढ़ाते जाने के लिए देश की जनता के सामने काल्पनिक दुश्मन के तौर पर किसी भी देश को खड़ा करता रहता है। इस बार भी इसका कोई अपवाद नहीं है। उनका ताबेदार मीडिया इस प्रचार में जोरशोर से लग गया है। क्योंकि इस तरह मनगड़ंत कोई दुश्मन खड़ा किये बिना देश की जनता को उसके खिलाफ उत्तेजित कर हर साल सामरिक बजट आवंटन लगातार बढ़ाया नहीं जा सकता। सरकार साफ-साफ बताये कि बाहर के किस देश से हमला होने का खतरा दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान या चीन के साथ कुछ सरहदी विरोध को बढ़ा चढ़ा कर अगर यह दिखाया जाये कि फौजी हमले का खतरा है तो दुनिया के हथियारों के सौदागर और इस देश के कटमनी लेने वाले खुश हो सकते हैं, इससे उग्र राष्ट्रीय दंभवादियों को रसद मिल सकती है, लेकिन देश के सचेत लोग इस पर यकीन नहीं करेंगे।

भारत सरकार के नेता-मंत्री-अफसरशाह-वैज्ञानिक कह रहे हैं कि 'देश की सुरक्षा और प्रतिरक्षा बन्दोबस्त को और भी पुख्ता बनाने में अन्तर्महादेशीय प्रक्षेपास्त्र सहायक होगा।' देश का मतलब क्या है? वह क्या अखण्ड सत्ता है? नहीं, बिल्कुल नहीं है। एक देश भारत में ही दो देश हैं। एक भारत मुठ्ठीभर धनकुबेरों और उनके चाटुकार मंत्री-अफसरशाह-राजनीतिज्ञों का है। दूसरा है विशालसंख्यक मध्यमवर्ग, कम आय वालों और गरीब मजदूर-किसान-आम लोगों का। एक शासकों और शोषकों का और एक शासित और शोषितों का। बिल्कुल अलग इन दो सत्ताओं की सुरक्षा की धारणा भी दो तरह की है। शासक पूंजीपति वर्ग की सुरक्षा का मायने है उनकी पूंजीनिवेश की सुरक्षा, वित्तीय पूंजी की सुरक्षा, सर्वाधिक मुनाफा लूटने की निश्चितता। जबकि दूसरी सत्ता, देश के बहुसंख्यक नब्बे फीसद आम लोगों के लिए सुरक्षा का मायने है उनकी रोजी-रोटी की सुरक्षा, महंगाई-बेरोजगारी-छंटनी से सुरक्षा, इलाज के अभाव में होने वाली मौत से सुरक्षा, अशिक्षा से सुरक्षा, औरतों की इज्जत-आबरू की सुरक्षा, किसानों के जिन्दा रहने की सुरक्षा। क्या यह अस्त्र उन्हें यह सुरक्षा दे सकेगा? क्या हजारों हजार किसानों को आत्महत्याओं से बचा पायेगा? आये दिन जो अनगिनत औरतें बेइज्जती, उत्पीड़न, बलात्कार की शिकार हो रही हैं, क्या यह अस्त्र उससे उनकी रक्षा कर पायेगा? आये दिन जिन अनगिनत औरतों कीं खरीद-फरोख्त हो रही है, क्या यह अस्त्र उससे उनकी रक्षा कर पायेगा? बेरोजगार नौजवानों की बेरोजगारी दूर कर पायेगा? यह अगर ऐसा नहीं कर सकता तो इस अस्त्र को लेकर इतना गर्व करने की क्या बात हो सकती है? जबकि इस एक बैलेस्टिक मिसाइल पर होने वाले खर्च से ही समस्त प्रसूति माताओं का कुपोषण दूर किया जा सकता है, हैजा-मलेरिया-टीबी का उन्मूलन किया जा सकता है, देश से अनपढ़ता को दूर किया जा सकता है।

यह सब नेता अच्छी तरह जानते हैं कि ये सहज सरल सी बात है। फिर भी क्या ऐसा हुआ? देश की सुरक्षा की बातें, देश के लोगों की सुरक्षा की बातें चाहे कितनी ही की जाती हों, असल में इसके पीछे भारतीय पूंजी का स्वार्थ ही काम कर रहा है। हवाई दुश्मन और खतरे का हौआ खड़ा करके अपनी अस्त्रसज्जा बढ़ाते जाने के जिस रास्ते का अमेरिकी साम्राज्यवाद अनुसरण करता जा रहा है, पूंजीवादी भारत राष्ट्र भी उसी रास्ते पर चलना चाहता है। दुनिया का सरगना बनकर दूसरे देशों पर लाठी घुमाने की साम्राज्यवादी नीति के पीछे है देश-देश में साम्राज्यवादी पूंजी के बेरोकटोक प्रवेश के द्वार खोलने का मनसूबा। एक पर एक प्रक्षेपास्त्रों, आधुनिक हथियारों के जखीरे आदि से समझा जा सकता है कि भारतीय पूंजीवादी राष्ट्र अब और अतीत की तरह हथियारों की होड़ के खिलाफ शान्ति का वचन देने को कतई राजी नहीं है। एक दिन भारतीय पूंजी की ताकत हासिल करने के तकाजे से ही 'निरस्त्रीकरण', 'गुट निरपेक्ष आन्दोलन', 'शान्ति' आदि की बोली बोलने का सहारा लेने की जरूरत थी। आज भारतीय पूंजी ताकतवर होकर बहुराष्ट्रीय हो गई है, दुनिया के बाजार में घुस रही है। इस उपमहादेश में एकाधिपत्य की वह दावेदार है। महाशक्ति के तमगे के लिए ही उसे सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्य के दर्जे, प्रभावशाली 'आईसीबीएम क्लब' के छठे सदस्य के रूप में मान्यता की जरूरत है। इस आधिपत्य का अर्थ है इस क्षेत्र के किसी भी देश के अन्दर वह जब चाहे दखलअंदाजी कर सकेगा। किसी भी देश के साथ वाणिज्यिक लेनदेन उसके द्वारा निर्धारित शर्तों पर होगा। लेकिन अमेरिकी साम्राज्यवादियों की मदद के बिना यह आकांक्षा पूरी होने वाली नहीं है। इस लक्ष्य को पूरा करने के उद्देश्य से ही भारत अब अमेरिकी साम्राज्यवादी गुट में शरीक है, दक्षिणपूर्व एशिया, खासकर हिन्द महासागरीय क्षेत्र में अमेरिकी आधिपत्य का रणनीतिक साझेदार है। अमेरिका भी भारत को भरोसेमंद पार्टनर मानता है। इसलिए जिस अमेरिका ने इराक पर नरसंहारक परमाणु अस्त्र तैयार करने का झूठा आरोप लगा कर इस बहाने इराक को मटियामेट कर दिया, ईरान की परमाणु परियोजना को लेकर जो इतना 'चिन्तित' है, उत्तर कोरिया द्वारा यहां तक कि उपग्रह छोड़ना चाहने पर भी जिसे भूत दिखाई देता है, उसने भारत के द्वारा परमाणु अस्त्रवाहक ऐसे महास्त्र प्रक्षेपण पर भी कोई गुस्सा जाहिर नहीं किया उल्टे शाबासी दी।

वाह रे सीपीआई(एम)-सीपीएम का मार्क्सवाद! इन दोनों पार्टियों के नेताओं द्वारा अग्नि मिसाइल का प्रक्षेपण करने पर खुशी जाहिर की गई है। इससे पहले ही भारत के द्वारा परमाणु बम परीक्षण के समय इन दोनों पार्टियों की यही भूमिका देखी गई थी। वे इसे भारतीय वैज्ञानिकों की कामयाबी के तौर पर दिखाते हैं और वर्ग चरित्र निर्धारण के मूल मुद्दे को चालाकी से टाल देने की कोशिश करते हैं। भारत जैसे एक शोषणमूलक पूंजीवादी राष्ट्र की दमनकारी क्षमता बढ़ने में जो अस्त्र परियोजना मदद करती है, उसकी साम्राज्यवादी आकांक्षा पूरी करने में जो सफल 'प्रक्षेपास्त्र प्रक्षेपण' मदद देता है, उसमें वैज्ञानिकों की कामयाबी देखना चाहे यह और किसी का भी हो, पर मार्क्सवादियों का काम नहीं है। अतीत की तरह इस बार भी सीपीआई(एम)-सीपीआई के नेतृत्व की प्रतिक्रिया दिखलाती है कि मार्क्सवादी का लबादा ओढ़े इन दोनों पार्टियों का मूल दृष्टिकोण बुर्जुआ यानी पूंजीवादी पार्टियों कांग्रेस-बीजेपी से अलहदा कुछ नहीं है।

अत: यह बात साफ है कि इस प्रक्षेपण के साथ देशहित, देश के करोड़ों करोड़ लोगों के हित का कोई नाता नहीं है। बल्कि यह प्रक्षेपण उनके जीवन की दुर्दशा को और भी बढ़ा देगा। क्योंकि यह प्रक्षेपण इस क्षेत्र में हथियारों की होड़ को और भी बढ़ा देगा। सरकार भी आम आदमी के खाद्य-स्वास्थ्य-शिक्षा के बजट आवंटन को और भी घटा कर सामरिक बजट आवंटन को लगातार बढ़ाती रहेगी जो आम आदमी का जीना और भी दूभर कर डालेगा, उनकी दुख-तकलीफें और भी बढ़ा देगा, उन पर और भी कहर ढा देगा, साथ ही साथ युद्ध उत्तेजना फैला देगा।

24 अप्रैल–देशभर में

(पृष्ठ 2 का शेष)

डिंडोली रोड़ पर आरडी नगर सब्जी बाजार पहुँच कर सभा में तब्दील हो गया। कॉमसोमोल स्वयंसेवकों ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

सभा की मुख्य वक्ता एसयूसीआई (सी) की केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. छाया मुखर्जी ने राज्य में मानवता के एकमात्र शत्रु पूँजीवाद के खिलाफ अपना संघर्ष जारी रखने के लिए गुजरात के पार्टी कार्यकर्ताओं, समर्थकों व आम लोगों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि न केवल गुजरात में बल्कि पूरे देश में ही स्थिति गंभीर है क्योंकि पूँजीवाद मरणासन्न है और अब कुछ भी प्रतिशील पैदा नहीं कर सकता है। यही वजह है कि आम आदमी इस तरह के निर्मम शोषण का शिकार है। उन्होंने कहा कि जो किसान अनाज पैदा करते हैं वे उसी अनाज को अपने परिवार का पेट भरने के लिए पुन: खरीद नहीं सकते हैं क्योंकि बिचौलियों और एजेन्टों की वजह से उन्हें अपने अनाज के वाजिब दाम नहीं मिले हैं। दूसरी तरफ अनाज के दाम आकाश छूने लगते हैं। खासकर भूमण्डलीकरण की नीति लागू होने के बाद किसानों की आत्महत्याओं में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। एफसीआई के गोदामों में अनाज सड़ रहा है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट के बार बार के निर्देशों के बावजूद पूँजीपति वर्ग की ताबेदार सरकार भूख से मर रहे गरीब लोगों के बीच अनाज वितरण को तैयार नहीं है।

महंगाई-बेरोजगारी इस कद्र बढ़ गई है कि लाखों की संख्या में लोग अपना गृह प्रदेश छोड़ कर दूसरे प्रदेशों में रोजगार के लिए माइग्रेट कर रहे हैं जहाँ सस्ते श्रमिकों के रूप में उनका शोषण किया जा रहा है और बुनियादी हकों और पहचान से वंचित किया जा रहा है। सूरत इसकी मुँह बोलती मिसाल है। उन्होंने छात्र-नौजवानों में सांस्कृतिक पतन का भी जिक्र किया जिसे पूँजीवादी मीडिया द्वारा उनकी नैतिक रीढ़ को तोड़ने के लिए परोसा जा रहा है। न केवल क्रान्तिकारियों, स्वतंत्रता सेनसनियों और सामाजिक सुधारकों के जीवन-संघर्ष को उनसे छिपाया जा रहा है बल्कि उनसे सम्बन्धित पाठ्य सामग्री स्कूल-कॉलेजों की पाठ्य पुस्तकों से हटायी जा रही है। उन्हें इन्टरनेट, मोबाइल, टेलिविजन आदि के जरिये पार्नोग्राफी, अश्लीलता और हिंसा के दलदल में धकेला जा रहा है। उन्होंने महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों पर भी चिन्ता जतायी। बहुत से राज्यों में शराबबंदी की नीति लागू नहीं है लेकिन गुजरात में है फिर भी शराब खुलेआम उपलब्ध है। परिवार टूट रहे हैं। बेटा माँ-बाप का आदर नहीं करता है। आत्मकेन्द्रीयता समाज का मुख्य लक्षण बन गई है। कोमल भावनाएं, हमदर्दी, स्नेह, प्यार मर रहा है। यह सब मरणासन्न पूँजीवाद की वजह से हो रहा है। असलिए हमारी दुख-तकलीफों का समाधान केवल इस पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने और इसकी जगह समाजवाद कायम करने से ही होगा।

गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. द्वारिकानाथ रथ ने कहा कि 14 मार्च के संसद अथियान की भारी सफलता ने दिखा दिया है कि इस शोषण से मुक्ति पाने की कितनी गहरी चाह लोागें में है। उन्होंने कहा कि इस अभियान में सबसे मार्के की बात यह थी कि इसमें भाग लेने वाले ज्यादातर नौजवान थे। उन्होंने सही क्रान्तिकारी पार्टी के नेतृत्व में जन आन्दोलन गठित करने पर बल दिया। अन्य वक्ताओं में शामिल थे गुजरात राज्य कमेटी के सदस्य अहमदाबाद से कॉ. मीनाक्षी जोशी, बडोदरा से कॉ. भरत मेहता, सूरत से कॉ. राम भरत मौर्य, सतेन्द्र सिंह व तपन दासगुप्ता। सभा की अध्यक्षता गुजरात राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. कानू खड़दिया ने की। सभा के बाद संसद अभियान पर तैयार स्लाइड शो एक बड़ी स्क्रीन पर दिखाया गया जिसे लोगों ने बड़ी दिलचस्पी लेकर देखा और सराहा।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

24 अप्रैल....

(पृष्ठ 3 का शेष)

जे.पी. नगर (यू.पी.): 21 अप्रैल को ग्राम अखबन्दपुर में पार्टी की जिला सांगठनिक कमेटी की ओर से 24 अप्रैल पार्टी स्थापना दिवस पूरे सम्मान के साथ मनाया गया। पूर्व जिला कमेटी सदस्य कॉ. गम्भीर सिंह ने संचालन किया और जिला इंचार्ज कॉ. शील कुमार ने सभा की अध्यक्षता की। पहले कॉ. शील कुमार व कॉ. नरेन्द्र सिंह ने क्रान्तिकारी गीत गाए। सभा प्रारम्भ हुई कॉ. शिवदास घोष गान से। एआईडीएसओ की संगठक कॉ. ऋतु चौधरी ने भी अपने विचार रखे। अन्त में कॉ. बेचन अली और कॉ. सपन चटर्जी ने मुख्य वक्तव्य रखे।

गुड़गांव (हरियाणा) : एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के 64वें स्थापना दिवस के मौके पर 27 अप्रैल को गुड़गांव के सैक्टर-4 की वैश्य समाज धर्मशाला में एक जनसभा आयोजित की गई। जनसभा को एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य एवं केरल राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड सीके लुकोस ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित किया। सभा की अध्यक्षता पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य एवं हरियाणा राज्य कमेटी के सचिव कॉ. सत्यवान ने की।

सभा में मई दिवस जोरदार ढंग से मनाने, जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं– महंगाई, बेरोजगारी, बिजली दरों व टैक्सों में वृद्धि, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण-व्यापारीकरण, किसानों की उपजाऊ भूमि के जबरन अधिग्रहण, भ्रष्टाचार, बढ़ते अपराधों के खिलाफ पूरे प्रदेश में जन जागरण अभियान चलाते हुए जिला मुख्यालयों पर विरोध प्रदर्शन करने और पूँजीवादी-साम्राज्यवादियों के युद्ध मनसूबों को रोकने के लिए 19 मई को रोहतक में विशाल विरोध प्रदर्शन करने की जनसभा में घोषणा की गई। उस दिन अमेरिकी साम्राज्यवाद व नाटो की जंगखोर नीतियों के खिलाफ एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) द्वारा अखिल भारतीय विरोध दिवस मनाने का आह्वान किया है।

कॉमरेड सत्यवान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि देश के लोगों को गम्भीर समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। हालांकि केन्द्र व राज्य सरकारों में बैठे मन्त्री व राजनेता देश के विकास व आर्थिक वृद्धि के लम्बे-चौड़े दावे कर रहे हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि लगातार बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, छंटनी, बिजली दरों व टैक्सों में वृद्धि, शिक्षा व इलाज के व्यापारीकरण, किसानों की उपजाऊ भूमि के जबरन अधिग्रहण, हर स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार, प्रजातांत्रिक अधिकारों के हनन, जन आन्दोलन के नेताओं व कार्यकर्ताओं की हत्या और उन्हें झूठे मुकदमों में फंसाने, महिलाओं व बच्चों की खरीद-बेच व बलात्कार, इलाज के अभाव और भूख के कारण लाखों लोगों की मौत, कर्ज तले दबने से आत्महत्याओं जैसी लगातार बढ़ती समस्याओं से लोग दुखी व परेशान हैं। देश के विकास व वृद्धि की यही असल तस्वीर है। मौजूदा पूँजीवादी व्यवस्था न केवल महंगाई-बेरोजगारी बढ़ती जा रही है बल्कि पूरी तरह भ्रष्ट व पतित हो चुकी है। इसकी रक्षक पूँजीवादी पार्टियाँ व उनके नेता भ्रष्टाचार व घोटालों की दलदल में डुबे हुए हैं। पूंजीपतियों की समर्थक पार्टियों के नेता अपनी गद्दी बचाने के स्वार्थ में बड़ी बेशर्माई से ढोंग, छल-कपट व बेईमानी करते हैं और सार्वजनिक धन की लूट करने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता। पेट्रोल-डीजल तेल के दामों में बार-बार वृद्धि के अलावा हरियाणा सरकार ने बिजली के रेट बढ़ा दिये हैं। इसका उद्देश्य आम आदमी का खून चूसकर पूँजीपतियों का मुनाफा बढ़ाना व उनकी तिजोरियां भरना है। छात्रों-नौजवानों की नैतिक रीढ को तोड़ डालने के लिए वे शराब, जुआ, अश्लील फिल्मों व गन्दी पुस्तकों के प्रसार को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि इस देश में खुदीराम बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, प्रीतिलता, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां जैसे क्रान्तिकारी दोबारा पैदा न हो सकें और क्रान्तिकारी संघर्षों पर विराम लग जाये। यह हमला बेहद घृणित व खतरनाक है। जनजीवन में समस्याओं के लिए अंग्रेजों के जाने के बाद 1947 से देश में कायम यह पूँजीवादी व्यवस्था व पूँजीवादी राजसत्ता जिम्मेवार है। यह राजसत्ता पूँजीवादी शोषण, शासन व दमन के औजार का कार्य करती है। दुनियाभर में आज यह व्यवस्था, इसकी अर्थव्यवस्था, राजनीति व संस्कृति सब कुछ गहरे संकट में फंस चुकी है। हमारे देश में भी यही हाल है। मन्दी से बाहर निकलने का इनके पास कोई उपाय नहीं है। इसलिए अपने संकट का सारा बोझ आम आदमी पर डाला जा रहा है।

उन्होंने प्रदेश में बिजली दरों में प्रस्तावित वृद्धि और शिक्षकों की अनुबंध के आधार पर भर्ती की सरकारी नीति का कड़ा विरोध किया। उन्होंने डीजल को सरकारी नियंत्रण से मुक्त करने और किसानों की फसलों की खरीद की सही व्यवस्था न होने की भी निन्दा की। इन तमाम समस्याओं के खिलाफ देशव्यापी जन आन्दोलन खड़ा करने का उन्होंने आह्वान किया। उन्होंने इसके लिए पार्टी को मजबूत करने और वैज्ञानिक समाजवाद की विचारधारा अपनाने की जरूरत पर बल दिया।

कॉमरेड सीके लुकोस ने मंच पर बैठे साथियों और सभा में मौजूद लोगों को क्रान्तिकारी अभिनन्दन दिया। उन्होंने कहा कि इस 64वें पार्टी स्थापना दिवस पर मैं पहली बार आपसे मुखातिब हूँ। मैं केरल, तमिलनाडु में जाता हूँ, वहाँ के ज्यादातर साथी युवा होते हैं लेकिन मैं यह देखकर गदगद हूँ कि यहाँ वे सीनियर साथी भी मौजूद हैं जो इतने लम्बे अर्से से पार्टी के संघर्षों के बीच से गुजरे हैं।

सबसे पहले कॉ. लुकोस ने खेद प्रकट किया कि वे अपना भाषण हिन्दी में नहीं दे पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारा देश बहु भाषाभाषी है। बहुत सारी भाषा-बोली बोलने वाले लोग यहाँ रहते हैं। हालाँकि राजनैतिक आजादी मिली लेकिन शोषण से मुक्ति नहीं मिली। सभी भाषाभाषी लोग आज इस पूँजीवादी शोषण के शिकार हैं। आजादी के बाद भी पूरे देश में बोली जाने वाली कोई एक ही राष्ट्रीय भाषा नहीं उभर कर आ सकी। इसकी वजह आजादी आन्दोलन की एक कमी थी। आजादी आन्दोलन का समझौतापरस्त नेतृत्व और देश का राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग मजदूर क्रान्ति से डरता था। लोग एक न हो सकें इसलिए आज तक भी एक राष्ट्रीय भाषा को उभारा नहीं जा सका। भाषा के आधार पर जो एकता पैदा होती है शासक वर्ग वह पैदा करना नहीं चाहता है। उल्टे वह साम्प्रदायिकता पैदा करता है। भाषाई झगड़े पैदा करता है। वह क्रान्ति से डरता है। जैसे आजादी आन्दोलन के दिनों में अंग्रेजों की नीति थी 'फूट डाला राज करो' वैसे ही इस समझौतापरस्त नेतृत्व के रवैये के चलते हमारे देश में साम्प्रदायिकता फैली है और समाज एकताबद्ध होना चाहिए था वह नहीं हो पाया–यह हमारे दिवंगत नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने बताया है। आज हर भाषा में, हर संस्कृति में जो सम्भावनाएं हैं, विशाल क्षमताएं है, जो गुण हैं कि सभी लोगों की मिलजुल कर एक और भी उन्नत संस्कृति-सभ्यता बने उस सब को आजादी आन्दोलन के दिनों से ही बर्बाद किया जा रहा है और आजाद भारत में भी यही हो रहा है।

उन्होंने बताया कि हालाँकि एक राष्ट्रीय भाषा आज भले ही नहीं पैदा हो सकी है लेकिन बहुत सारे ऐसे शब्द हैं जो हिन्दी में हैं वे दूसरी भाषाओं में भी हैं। मैं बहुत दूर केरल से आया हूँ। हमारी भाषा मलयालम है। हरियाणा उत्तर में है और केरल दक्षिण में। उच्चारण की कुछ भिन्नता के बावजूद बहुत सारे शब्द मिलते-जुलते हैं जैसे मुख्य वक्ता शब्द वहाँ भी मुख्य वक्ता ही बोला जाता है। यहाँ आप लोग माँ-बाप कहते हैं वहाँ हम अम्मा-अप्पा कहते हैं। मातृभूमि या मातृभाषा शब्द वहाँ भी बोले जाते हैं। इसी तरह देश में दूसरी जगह पर भी हैं। अतीत में अगर सही नेतृत्व होता तो एकीकरण की, पूरे देश की जनता को भाषा के जरिये एक करने की सही दिशा में आगे बढ़ने की सम्भावनाएं और क्षमता थी और आज भी हैं। लेकिन इसके लिए ऐसा कोई आन्दोलन नहीं हुआ। इसलिए लोग आज भी एक दूसरे से जुदा-जुदा हैं। अंग्रेजी भाषा में भी ऐसे बहुत सारे शब्द हैं जो आज सभी भाषाओं में आ गये हैं। अगर सही नेतृत्व होता तो सारे देश में सारे जनगण के लिए एक भाषा को जन्म दिया जा सकता था। राष्ट्रीय भाषा के बिना भी उस समय के भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष बोस आदि जो पुरानी पीढ़ी के क्रान्तिकारी थे वे पूरे देश के लोगों के दिल में कितना आदर का स्थान पाये हुए हैं। उन्होंने कहा कि नवजागरणकाल में हमारे देश में आजादी आन्दोलन शुरू होने से पहले ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक महान हस्ती हुए हैं जो धर्म से मुक्त, रूढ़िवाद से मुक्त एक सही धर्मनिरपेक्ष भावना, सही मानवतावादी भावना लेकर चले थे। इसने देश पर एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी प्रभाव छोड़ा था। महाराष्ट्र में ज्योतिबा फूले पैदा हुए। आसाम में ज्योतिप्रसाद अग्रवाल पैदा हुए। बंगाल में शरतचन्द्र, यूपी में प्रेमचन्द और दक्षिण में सुब्रमण्यम भारती पैदा हुए। इन सभी साहित्यकारों ने साहित्य के जरिये एक ही भावना, पूरे देश में एक राष्ट्र की भावना को, राष्ट्रीय आजादी की भावना को पैदा किया था। इसने जन-जन को एकजुट किया था। हालाँकि यह नवजागरण यूरोप जैसा नवजागरण हमारे यहाँ नहीं हो पाया। लेकिन एक सेक्यूलर ह्युमेनिस्ट यानी सही धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी संस्कृति पैदा नहीं हो पायी। हमारे नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा है कि ये कम्युनिस्ट ही हैं जो सारे देश को एक कर सकते हैं, जो महान परम्पराएं हैं उन सभी परम्पराओं से अच्छी चीजें लेकर लोगों को एक कर सकते हैं और शोषण से मुक्ति दिला सकते हैं। इसलिए देश को एक करने और मेहनतकश जनता को शोषण से मुक्ति दिलाने का काम आज सच्चे कम्युनिस्ट ही कर सकते हैं। भाषा-बोली चाहे हमारी अलग-अलग हों फिर भी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की परम्परा को हमें पूरे देश में ले जाना होगा। राजनीति के क्षेत्र में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और सुभाष की परम्परा को हर भाषा-बोली में पूरे देश में आगे बढ़ाना होगा। साहित्य के क्षेत्र में शरतचन्द्र व प्रेमचन्द जैसे मनीषियों की भावना को ले जाना होगा। दुर्भाग्य से हमारे आजादी आन्दोलन के समय और आजादी के बाद भी जो आज शासन में हैं उन्होंने अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की साम्प्रदायिकता की नीति जो ब्रिटिश हुकूमत के दौर में शुरू हुई, उसी का सहारा लिया और जनता को बांटा। हिन्दू-मुसलमान के नाम पर लड़ाया, प्रतिक्रियावाद को बढ़ावा दिया। इसलिए आज अगर सही मायने में राष्ट्रीय एकता पैदा करनी है तो इस तरह देश में एक ही भाषा, एक संस्कृति, एक उन्नत सभ्यता हम कम्युनिस्ट ही दे सकते हैं। भाषा की संकीर्णता एक गंभीर समस्या है। आजादी आन्दोलन में अंग्रेजों के खिलाफ जब लड़ाई लड़ी गई तब उस लड़ाई की भाषा भी संघर्षशीलता थी। उसने हमें एक किया था। उसी के जरिये हम आधुनिक सभ्यता को लेकर चल रहे हैं। भगत सिंह, चन्द्रशेखर नेताजी सुभाष आदि हमारे जो राष्ट्रीय महापुरुष हुए हैं, उन्होंने कभी यह परवाह नहीं की कि वे किस जाति में जन्में हैं, कहाँ जन्में हैं और कौन से सम्प्रदाय में जन्में हैं। इसलिए देखिये उनके प्रति लोगों में जो प्यार है, आदर-सम्मान है वह सबसे ज्यादा है। ऐसे ही एक राष्ट्र बन सकता था लेकिन वह

(शेष पृष्ठ 5 पर)

गुड़गाँव में सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड सीके लुकोस

भ्रष्टाचार की ..

(पृष्ठ 3 का शेष)

उसने नहीं निभाई। इसके चलते सरकारी संस्था भारत अर्थ मूवर्स ने सरकार के 13 करोड़ 27 लाख रुपये का नुकसान किया है ऐसा सीबीआई की एफआईआर में बताया गया है। इसी बीच एक तृणमूल समर्थक सांसद ने यह आरोप लगाते हुए सीबीआई जाँच की माँग की है कि सेना की जमीन, स्पेशल फ्रंटियर फोर्स के नाइट विजन इंस्ट्रूमेंट, पैराशुट आदि अनेक साजोसामान खरीदने में आर्थिक भ्रष्टाचार हुआ है।

सेना प्रमुख ने मीडिया को दिये एक साक्षात्कार में खुद ही यह बात स्वीकार की है कि सेना के रोम-रोम में भ्रष्टाचार व्याप्त है, इस कैंसर को दूर करने के लिए बड़े पैमाने पर इलाज करने की जरूरत है। पूर्व प्रधानमंत्री देव गौड़ा के पुत्र कुमारस्वामी ने भी बताया है कि उनके पिता जब प्रधानमंत्री थे तब उनको भी सैनिक साजोसामान खरीदने के लिए कई बार घूस देने की चेष्टा हुई थी। रक्षा मंत्री ने बताया है कि भ्रष्टाचार की वजह से पिछले 10 साल में 6 कम्पनियों को ब्लैक लिस्टिड किया गया है। हिदायत दी गई है कि 100 करोड़ रुपये से ज्यादा का जो कोई समझौता हो उसके बारे में विशेष सतर्कता बरती जाये। सेना में व्याप्त भ्रष्टाचार को लेकर आरोप बहुत पुराना है। 1948 में देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के शासनकाल में ब्रिटिश जीप घोटाला, आगे चलकर बोफोर्स तोप खरीदने को लेकर प्रधानमंत्री राजीव गाँधी पर घूस लेने का आरोप, बीजेपी अध्यक्ष बंगारू लक्ष्मण पर रक्षा साजोसामान खरीदने को प्रभावित करने के लिए घूस लेने का आरोप, 2007 में इजराइल से बाराक मिसाइल खरीदने को लेकर हुआ घोटाला, कारगिल युद्ध में मारे गये भारतीय सैनिकों के लिए कफन खरीदने में हुआ घोटाला, सुकना जमीन घोटाला, आदर्श आवास घोटाले सहित ढेर सारे घोटाले बार बार उघड़ कर सामने आ रहे हैं। इनका कोई अंत नहीं है। लेकिन हैरानी की बात है कि इनमें से किसी को भी लेकर सरकार और देश की जाँचकर्ता एजेन्सियों ने जाँच पूरी नहीं की है। किसी भी आरोप का आखिर कोई हल नहीं निकला है। अपराधी कौन है यह देश के लोगों के सामने उजागर करने की सरकार ने कोई कोशिश नहीं की है बल्कि उल्टे यही कोशिश रही है कि किसी तरह कूट तर्क पेश करके इससे कन्नी काटी जाये। मामले को रफा दफा किया जाए। इस बार भी फिजूल के कुछ मुद्दों से जुड़े कुतर्क उठा कर मूल मुद्दे से ही संसद में मौजूद तमाम पार्टियों और सरकार ने कन्नी काटी है। वर्ना इस सब को लेकर बहुत ज्यादा खींचतान होने से हो सकता है कि कहीं उनके खुद के शासनकाल में हुए विभिन्न घोटाले सामने आ जाएं। इसलिए बीजेपी नेता अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री काल में राष्ट्रीय रक्षा सलाहकार ब्रिजेश मिश्र, जो वाजपेयी के बहुत करीबी माने जाते हैं, उन्होंने भी सेना प्रमुख से खफा होकर कांग्रेस सरकार से भी बुलंद आवाज में जवाब माँगा है कि सेना प्रमुख को बर्खास्त क्यों नहीं किया गया। इससे समझा जा सकता है कि मिश्र महाशय को डर है कि केंचुआ खोजते-खोजते कहीं साँप न निकल आये।

तमाम पूँजीवादी देशों की तरह भारत के पूँजीवादी राजनीतिज्ञ देश के लोगों को बताते हैं कि सेना और सरकार एक पवित्र संस्था है–निस्वार्थ 'देशप्रेम की प्रतीक है'। देश के प्रति लोगों का जो प्रेम है उसका फायदा उठा कर, झूठा जज्बा पैदा करके बुर्जुआ राज्य सेना की तमाम काली करतूतों को गोपनीयता की आड़ में छिपाता रहता है। देश की रक्षा करने के जज्बे को इस्तेमाल करके आये साल बजट के प्रतिरक्षा मद में धन आवंटन बढ़ाया जाता है। लेकिन जनता को पता नहीं चलता कि किस खाते में इतनी भारी रकम जा रही है। भारत सहित दुनिया के ज्यादातर देशों के शासकों के लिए शस्त्र व्यापार अब सबसे ज्यादा फायदेमंद व्यापार बन गया है। इस संकटग्रस्त पूँजीवादी दुनिया में इस क्षेत्र में हथियार निर्माता विभिन्न कम्पनियों के बीच तीव्र प्रतियोगिता चल रही है। इसलिए जीजान से पूँजीपति सर्वाधिक मुनाफा बरकरार रखने के लिए जिस किसी भी तरह से भ्रष्टाचार का सहारा लेने को तैयार हैं। इस देश के सरकारी नेता, अफसरशाह, फौजी अफसर ऐजेन्ट के तौर पर अपनी-अपनी मालिक लॉबी के स्वार्थ में कोई भी काम करने में पीछे नहीं रहते हैं। यहाँ तक कि सेवानिवृत्त कुछ सेना जनरल भी युद्ध के हथियारों के सौदागरों के दलाल के तौर पर काम करते हैं या खुद ही सरासर इस व्यापार में हिस्सेदार हैं। अतीत में इस तरह के पूर्व सेना जनरलों के नाम भारतीय सेना के साजोसामान की खरीद-फरोख्त के साथ जुड़ गये हैं। इस बार भी सेना प्रमुख वीके सिंह ने घूस देने का जिनको जिम्मेदार ठहराया है वे पूर्व सेना गुप्तचर प्रमुख हैं। कहा जा रहा है कि वे मिलिटरी में जाते हैं ट्रक सप्लाई करने वाली वेक्ट्रा कम्पनी के ऐजेंट के तौर पर।

साथ ही साथ इस घटना ने आँख खोल दी है कि तथाकथित देशरक्षा में संलग्न सेना कितने बड़े भ्रष्टाचार से ग्रस्त प्रतिष्ठान है। ऐसा क्यों हुआ? देश की रक्षा के लिए जान तक कुर्बान कर देने को तैयार है कह कर, सेना को देश प्रेम के प्रतीक के तौर पर पेश किया जाता है, फिर क्यों इसमें घोर भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है? असल में पूँजीवादी व्यवस्था में मिलिटरी की भूमिका को 'देश सेवा' के तौर पर पेश करने में ही बड़ा भारी छलावा है। पूँजीवादी राष्ट्र में तमाम कायदे-कानूनों और प्रतिष्ठानों की तरह ही इस मिलिटरी की 'देश सेवा' का मायने है पूँजीपति वर्ग की सेवा करना, शोषण-लूट करने के उनके स्वार्थ की रक्षा करना, सरकारी आतंक और उत्पीड़न के साधन के तौर पर काम करना। यह काम भी एक सवैतनिक नौकरी है। यहाँ जरूरत पड़ने पर रणभूमि में जान देना एक अत्यावश्यक शर्त है। भारत की राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज सभी जब इन हालात से रूबरू हैं कि छल-कपट, बेईमानी और भ्रष्टाचार का कीचड़ सर्वत्र व्याप्त है तब इस पूँजीवादी व्यवस्था का अभिन्न अंग सेना भ्रष्टाचार से मुक्त होगी–यह सोचना ही बालसुलभ है। ❑❑

24 अप्रैल.....

(पृष्ठ 4 का शेष)

सही मायने में बन नहीं पाया। कॉमरेड घोष ने हमें दिखाया कि हमारी धरती में हमारे देश की माटी में बहुत सारी अच्छी चीजें हैं, अच्छी परम्पराएं हैं, अच्छे संस्कार हैं उनको लेकर हमें आगे बढ़ना है। कार्ल मार्क्स मानवजाति के एक महान सपूत हुए हैं जिन्होंने दिखाया कि सिर्फ प्रकृति के खिलाफ ही नहीं बल्कि शोषक वर्ग के खिलाफ लड़ने वाला यह श्रमिक वर्ग ही है जो एक नई सभ्यता का निर्माता बनेगा। देश-देश में लोगों के एक होने की यह जो प्रक्रिया है, तरीका है मार्क्स ने दिखाया कि उसमें स्वार्थी लोगों ने बाधा पहुँचायी है, रुकावट डाली है। ये स्वार्थी लोग कौन हैं? स्वार्थी लोग वे हैं जो इन्सान का खून चूसते हैं, शोषण करते हैं। उन स्वार्थी लोगों ने, शोषकों ने इस प्रक्रिया में बाधा पहुँचायी। भारत में कार्ल मार्क्स के सच्चे उतराधिकारी हुए हैं कॉमरेड शिवदास घोष जिन्होंने भारत की सरजमीन पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद की ठोस समझदारी दी और इसके आधार पर मनों की एकता को आगे बढ़ाया। हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व का नजरिया बहुत ही संकीर्ण था, साम्प्रदायिक सोच से ग्रस्त था। इसलिए अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की चाल चलते रहे। आज जात-पात के नाम पर फूट डालते हैं। किसलिए? पूँजीपतियों के शासन-शोषण को मजबूत करने के लिए। चाहे इंदिरा गाँधी का जमाना रहा हो या राजीव गाँधी का, उन्होंने क्या किया? उन्होंने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए धार्मिक बहुसंख्यकों की राजनीति की। मंदिर-मस्जिद के मुद्दे को भुनाया, आरक्षण, मण्डल आयोग–इन सभी मुद्दों को भड़काया किसलिए? लोागें को बांटने के लिए। शोषक खुश होते हैं। शोषण जारी रहता है। इन फूटपरस्त नीतियों का कुप्रभाव समाज पर पड़ता है।

कॉमरेड लुकोस ने आगे कहा है कि कामरेड शिवदास घोष के सच्चे शिष्य होने के नाते मानव समाज की प्रगतिशील धारा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हमारे कंधों पर आ गई है। जनआन्दोलन को ताकतवर बना कर ही हम इसे आगे बढ़ा सकते हैं। आज सभी भाषाभाषी लोग शोषित-पीड़ित हैं, वे पूँजीवाद के खिलाफ लड़ते हुए ही अब एक होंगे। किसान आत्महत्या कर रहे हैं जिनकी संख्या दो लाख हो चुकी है। शासकों को उनकी कोई परवाह नहीं है। महंगाई बेइन्तहा बढ़ रही है। डीजल-पेट्रोल के दाम बार बार बढ़ाये जा रहे हैं। डीजल को सरकारी नियंत्रण से मुक्त किया जा रहा है। यह बड़ी कम्पनियों के हाथों में दिया जा रहा है। यह तो एक छोटा सी बानगी है। आने वाले समय में महंगाई और भी जदा बढ़ेगी। लोग मर रहे हैं। जीवन गवां रहे हैं। पिछले 20 साल से चल रहे भूमण्डलीकरण-निजीकरण के दौर में आम आदमी की पीठ दिवार से सटा दी है। उसे दबोच उकर मारा जा रहा है। आम आदमी ऐसे में जिन्दा रहने के लिए संघर्ष चाहता है। अगर सही क्रान्तिकारी पार्टी नेतृत्व में हो तो लोग आन्दोलन में आते हैं। उनमें लड़ाकू और जोशीला मनोभाव एसयूसीआई(सी) ने पैदा कर दिया है। पार्टी बढ़ रही है। हाल ही में गत 14 मार्च 2012 को एक लाख से ज्यादा लोगों ने एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के आह्वान पर दिल्ली में रामलीला मैदान से संसद तक महारैली में भाग लिया और 3 करोड़ 57 लाख लोगों के हस्ताक्षर करवा कर 8 सूत्री मांग-पत्र प्रधानमंत्री को सौंपा। जन आंदोलन की यह एक शानदार मिसाल है। इसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। देख कर लोगों को अच्छा लगा कि देश में कोई तो पार्टी है जो हमारी है। एसयूसीआई(सी) हमारी पार्टी है। इसी मनोभावना को लेकर देश के सभी हिस्सों से एक लाख से ज्यादा लोग इस ऐतिहासिक रैली में पहुँचे। भले ही अलग-अलग क्षेत्रों से आये थे, भाषा-बोली, रीति-रिवाज, परम्पराएं और पहनावे अलग-अलग थे, पर वे एक थे, रामलीला मैदान में एक जैसा खाना खाया। एक नये और विशाल भारत की माँगों को लेकर ये आन्दोलन एसयूसीआई(सी) ने करके दिखाया। जो नकली कम्युनिस्ट पार्टियाँ हैं वे अपने काले कारनामें की वजह से जनता के मन से उतर चुकी हैं। लोग आज मानते हैं कि एसयूसीआई(सी) ही एक सही वामपंथी पार्टी है। लोगों के सामने आशा की एक किरण है। कॉ. लुकोस ने फिर केरल के अपने कुछ अनुभव सुनाये। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल से सीपीआई(एम)-नीत वाम मोर्चा सरकार का 34 साल पुराना राज नहीं रहा। केरल में भी उनकी सरकार नहीं रही जहाँ कांग्रेस व सीपीआई(एम) के बीच मुजिकल चेयर का खेल चलता रहा है। कभी कांग्रेस कभी सीपीआई(एम) बारी बारी से शासन में आते रहे हैं। हमने जब एसयूसीआई(सी) बनानी शुरू की तब ये हमारी खिल्ली उड़ाया करते थे। हमने कहा कि ठीक है पर आप तो राज में हैं आपने लोगों के लिए क्या किया। सीपीआई(एम) ने जन आन्दोलनों को कुचलने के लिए लोगों का खून बहाया है। जबकि एसयूसीआई(सी) वहाँ एक पर एक जन आन्दोलन कर रही है। आन्दोलनों का एक नया दौर शुरू हुआ है। कॉ. लुकोस ने नंदीग्राम व सिंगुर के किसान आन्दोलन का जिक्र करते हुए कहा कि सीपीआई(एम) सरकार वहाँ कांग्रेस सरकार की तर्ज पर सेज बनाना चाहती थी। किसानों की जमीन टाटा व सलीम समूह को देना चाहती थी। पूँजीनिवेश के लिए उन्हें बुलाना चाहती थी। हमारी पार्टी के नेतृत्व में जन संघर्ष कमेटियाँ बना कर आन्दोलन हुआ। सरकार द्वारा किसान आन्दोलन को कुचलने की पूरी कोशिश के बावजूद लड़कर लोगों ने जीत हासिल की है। इससे लोगों में भरोसा पैदा हुआ कि हम लड़ाई जीत भी सकते हैं। उन्होंने कहा कि देश में कायम शोषणमूलक पूंजीवादी व्यवस्था जन जीवन को तबाह कर रही है। एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के नेतृत्व में केरल में लोगों की प्रमुख मांगों को लेकर लम्बे अरसे से जन आन्दोलनों का संचालन कर रही है। पार्टी को भरपूर जनसमर्थन मिल रहा है। 101 जन कमेटियाँ हमारी पहल पर केरल में बनी हैं। बड़े-बड़े जुलूस हुए है जिन में से एक में तो 30 हजार लोग शामिल थे। पार्टी तेजी से बढ़ रही है। उन्होंने संघर्षों को गठित करने और टिकाऊ बनाने के औजार के रूप में राजनैतिक रूप से सचेत जनकमेटियां व स्वयंसेवक दस्ते विकसित करने पर बल दिया। इन्होंने जनता के बीच जाने, उनके साथ रहने और उनके संघर्षों को खड़ा करने का संकल्प लेने का आह्वान किया।

मई दिवस पर श्रमिकों ने अपने हकों के लिए किया एकजुटता का इजहार

दिल्ली में ट्रेड यूनियनों के संयुक्त जुलूस में शामिल एआईयूटीयूसी के कार्यकर्ता और सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. हरीश त्यागी

रोहतक, हरियाणा में एआईयूटीयूसी की सभा में उपस्थित कॉ. सत्यवान

रिवाड़ी में मई दिवस के शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए एआईयूटीयूसी कार्यकर्ता

गुड़गाँव(हरियाणा) में संयुक्त सभा को सम्बोधित करते हुए एआईयूटीयूसी के कॉ. रामकुमार

सोनीपत, हरियाणा में संयुक्त जुलूस में शामिल एआईयूटीयूसी

नागपुर, महाराष्ट्र में मई दिवस पर एआईयूटीयूसी का जुलूस

कॉमरेड किम उल सुंग जन्मशताब्दी कार्यक्रम में शामिल हुए कॉ. माणिक मुखर्जी

समाजवादी उत्तर कोरिया की क्रान्ति के रचनाकार, प्रथम राष्ट्रपति कॉमरेड किम उल सुंग की जन्म शताब्दी मनाने के उपलक्ष्य में उत्तर कोरिया की वर्कर्स पार्टी ने गत 11 से 16 अप्रैल तक पियोंग में 7 दिनव्यापी विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें शामिल होने के लिए उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद-विरोधी कमेटी के महासचिव, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी को आमंत्रित किया। इस कार्यक्रम में शामिल होते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने एक विशेष सभा की अध्यक्षता की और वक्तव्य रखा। उल्लेखनीय है कि इस दौरे में चर्चा के जरिये उत्तर कोरिया की वर्कर्स पार्टी और एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बीच पार्टीगत सम्बन्ध कायम हुआ है। तस्वीर में सामने वाली कतार में बायें से दूसरे हैं कॉमरेड माणिक मुखर्जी।

भोपाल में छात्रों का प्रदर्शन

महिलाओं और बच्चियों पर बढ़ते अपराधों जिसमें बैतूल में 8वीं की छात्रा के साथ घटी निर्मम घटना के विरोध में और दोषियों को उदाहरणमूलक सजा देने की माँग को लेकर आल इण्डिया डीएसओ ने 9 अप्रैल को भोपाल में बोर्ड ऑफिस चौराहे पर एक प्रदर्शन आयोजित किया। प्रदर्शन में भोपाल, ग्वालियर, गुना आदि जिलों से संगठन के कार्यकर्ता और छात्र-छात्राएं शामिल हुए। प्रदर्शन में एआईडीएसओ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कॉमरेड सुनील गोपाल ने कहा कि मध्यप्रदेश महिलाओं व बच्चिओं पर दुष्कृत्य की ऐसी घटनाओं के मामले में पहले नंबर पर है। यह हमारे प्रदेश के लिए बड़ी शर्म की बात है। ऐसे दुष्कृत्य करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देने की बजाय यहाँ की सरकार उन्हें प्रश्रय दे रही है। सरकार शराब के ठेकों के लाइसेन्स देकर, स्मैक के अवैध धंधे को चलने देकर और अश्लीलता, अपसंस्कृति को टेलिविजन, इन्टरनेट, मोबाइल फोन में परोसने की खुली छूट देकर ऐसे अपराधों को और बढ़ावा दे रही है। साथ ही साथ किताबों से क्रान्तिकारियों, महापुरुषों के पाठ हटा कर फिल्म स्टारों, स्पोर्ट्स स्टारों की जीवनियाँ पढ़ाती जा रही हैं। इससे सामाजिक मूल्यों, नैतिक मूल्यबोधों को सीखाने की बात तो दूर रही, खाओ, पीयो, मौज करो की आत्मकेन्द्रित मानसिकता पनप रही है। सरकार एक तरफ तो बेटी बचाओ अभियान और नारियों के सशक्तिकरण का दंभ भर रही है, वहीं दूसरी तरफ ऐसी गतिविधियों को बढ़ावा देकर बेटियों और महिलाओं को कमजोर बना रही है। यह दोहरा चरित्र सरकार के असली चेहरे को उजागर कर देता है। इसके पीछे शासक वर्ग की मंशा है छात्र-नौजवानों व महिलाओं आदि को निष्क्रिय बना कर अन्याय-अत्याचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने से उन्हे रोक देना। ऐसे में छात्र संगठन एआईडीएसओ सरकार से माँग करता है कि इन दुष्कृत्यों में लिप्त दोषियों को सख्त सजा देने के लिए फास्ट ट्रेक कोर्ट बनायी जाये। छात्राओं को स्कूल-कॉलेजों में आत्मरक्षा करने का प्रशिक्षण दिया जाये। तमाम तरह की नशाखोरी व मीडिया में अश्लीलता परोसने पर रोक लगाई जाये। पाठ्यक्रमों में क्रान्तिकारियों व मनीषियों का जीवन-संघर्ष पढ़ाया जाये।

प्रदर्शन में अन्य वक्ताओं के रूप में कसॅमरेड्स रूपेश जैन, विनोद लोबारिया व बबीता समर ने भी बात रखी। प्रदर्शन का संचालन एआईडीएसओ के ऑल इण्डिया काउंसिल सदस्य कॉ. मुदित भटनागर ने किया।

बिजली दर में बेतहाशा बढ़ोतरी का विरोध

पटना / मुजफ्फरपुर: बिजली दर में बेतहाशा बढ़ोतरी के खिलाफ राज्यव्यापी प्रतिवाद दिवस के तहत 31 मार्च को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) कार्यकर्ताओं ने पटना और मुजफ्फरपुर में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला फूंका और सभा की। पटना के भगत सिंह चौक तथा मुजफ्फरपुर के पोस्ट ऑफिस चौक पर पुतला दहन करने के बाद नुक्कड़ सभा हुई। पटना में सभा को एसयूसीआई (सी) राज्य कमिटी सदस्य कॉ. एम के पाठक, जिला कमिटी सदस्य कॉ. बैद्यनाथ शर्मा, कॉ. अवधेश कुमार, कॉ. राजकुमार चौधरी, कॉ. अनामिका ने भी बात रखी। वहीं मुजफ्फरपुर में पार्टी के जिला सचिव कॉ. अर्जुन कुमार, जिला कमिटी सदस्य कॉ. काशीनाथ सहनी, कॉ. राम नरेश राय, कॉ. अरविन्द कुमार, कॉ. शिवचन्द्र पासवान आदि ने अपने विचार रखे।

बिजली दर वृद्धि के खिलाफ पटना बंद सफल

पटना : अपने छह वर्षों के शासन में नीतीश कुमार के नेतृत्ववाली जदयू-भाजपा की राज्य सरकार ने बिजली की दरों को कई बार बढ़ाया है। नतीजतन 2005 के मुकाबले बिजली करीब ढाई गुना महंगी हो गयी है। गत 1 अप्रैल से होने वाली बिजली दर में प्रस्तावित 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी के विरोध में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) सहित बिहार में कार्यरत 22 वामपंथी-प्रगतिशील-जनतांत्रिक संगठनों ने एकजुट होकर 'महंगी बिजली विरोधी संघर्ष मंच' का निर्माण किया। इस मंच के आह्वान पर प्रस्तावित बेतहाशा बिजली दर वृद्धि के खिलाफ 21 मार्च को विद्युत भवन के समक्ष हजारों लोगों का विशाल धरना आयोजित हुआ और आंदोलन की अगली कड़ी के तौर पर उसी धरने से 12 अप्रैल को 'पटना बंद' का आह्वान किया गया। बढ़ते आंदोलन के दबाव में 31 मार्च को बिजली दर में प्रस्तावित 50 प्रतिशत वृद्धि की जगह पर औसत 12.1 प्रतिशत की वृद्धि की घोषणा की गयी। यह आंदोलन की आंशिक जीत थी। महंगी बिजली विरोधी संघर्ष मंच ने इस बीच अपनी बैठक में 12 अप्रैल के पटना बंद को यथावत् रखा। पटना बंद को सफल बनाने के लिए सघन प्रचार अभियान चलाया गया।

बंद की पूर्व संध्या पर 11 अप्रैल को गांधी मैदान स्थित शहीद भगत सिंह चौक से जुलूस निकाला गया, जो पटना के महत्वपूर्ण मार्गों से होते हुए पटना जंक्शन गोलम्बर पहुंचा और वहां मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला जलाया गया। सभा को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरुण कुमार सिंह सहित महंगी बिजली विरोधी संघर्ष मंच के घटक दलों के नेताओं ने संबोधित किया। कॉ. अरुण कुमार सिंह ने कहा कि जनता की गाढ़ी कमाई से निर्मित विद्युत उद्योग को निजी मालिकों को सौंपकर, विद्युत बोर्डों को समाप्त कर बिजली को आम आदमी की पहुंच से बाहर कर देना ही सरकार की मंसा है। सुशासन और विकास का राग अलापने वाली नीतीश सरकार पूंजीपतिपरस्त जनविरोधी विद्युत कानून-2003 को बिहार में तत्परता से लागू कर रही है। ऐसे में बिजली दर में बेतहाशा वृद्धि के खिलाफ आन्दोलन आज समय की मांग है।

12 अप्रैल को पटना बंद के समर्थन में शहर के विभिन्न इलाकों से जत्थे निकाले गये और लोगों से बंद में शामिल होने की अपील की गयी। बंद के समर्थन में निकले जत्थे का नेतृत्व एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरुण कुमार सिंह समेत सीपीआई, सीपीआई (एम), एमसीपीआई (यू), सीपीआई (एम-एल), ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लाक, आरएसपी, जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी, जनवादी लोक मंच, जनप्रतिरोध संघर्ष मंच, सर्वहारा जन मोर्चा, कम्युनिस्ट सेंटर ऑफ इंडिया, सीपीआई (एम-एल)-आरएस भाईजी, जनवादी मजदूर किसान सभा, अखिल हिन्द फॉरवर्ड ब्लाक (क्रांतिकारी), बिहार परिवर्तन मोर्चा, भारतीय जनवादी फॉरवर्ड ब्लाक (बिहार), इंडिया एगेंस्ट करप्शन, श्रम मुक्ति संगठन, बिहार मोटर ट्रांसपोर्ट फेडरेशन (ऑटो यूनियन), समाजवादी जन परिषद तथा बिहार जनकल्याण समिति के नेताओं ने किया।

पटना बंद को सफल बनाने के लिए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर ने नागरिकों का अभिनंदन करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी है। कॉ. शिव शंकर ने अपने बयान में कहा कि नीतीश सरकार भी केन्द्र की कांग्रेस तथा पूर्व की राज्य सरकारों की ही जनविराधी राह पर चलते हुए एक के बाद एक जनविरोधी कदम उठा रही है। उन्होंने बिजली दर वृद्धि के खिलाफ आन्दोलन को प्रतिरोधात्मक स्तर तक ले जाते हुए इसे राज्यव्यापी आंदोलन का रूप देने की आवश्यकता जताई और राज्य की आम जनता से बिजली दर वृद्धि सहित विभिन्न सवालों पर दीर्घस्थायी जन आंदोलन निर्मित करने की अपील की।

''शहीद भगत सिंह का संघर्ष एवं मौजूदा परिस्थिति में छात्र-युवाओं का दायित्व'' विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

लालगंज (वैशाली): एआईडीवाईओ एवं एआईडीएसओ के संयुक्त तत्वावधान में बिहार के लालगंज शहर स्थित शारदा सदन पुस्तकालय सभागार में ''शहीद-ए-आजम भगत सिंह का संघर्ष एवं मौजूदा परिस्थिति में छात्र- युवाओं का दायित्व'' विषयक संगोष्ठी दिल्ली एसेम्बली बम कांड दिवस के मौके पर 8 अप्रैल को आयोजित की गयी। संगोष्ठी की अध्यक्षता एआईडीएसओ के कॉ. मो. सुलतान ने की।

मुख्य वक्ता एआईडीएसओ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं एसयूसीआई(सी) के बिहार राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरुण कुमार सिंह ने संगोष्ठी में उपस्थित छात्रों, नौजवानों व बुद्धिजीवियों को संबोधित करते हुए कहा कि ''आजादी के दौरान दो विपरित विचार के लोग एक साथ ब्रिटिश गुलामी से मुक्ति के लिए लड़ रहे थे, एक थे समझौतावादी विचारधारा के लोग जो ब्रिटिश हुकूमत से अनुनय-विनय-समझौते के जरिये स्वायत्तता और अन्ततः सत्ता का हस्तान्तरण चाहते थे। जबकि दूसरे गैर समझौतावादी धारा के लोग थे। गैर समझौतावादी विचार धारा का प्रतिनिधित्व कर रहे हिस्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की बैठक में निर्णित फैसलों के तहत शहीदे आजम भगत सिंह व बटुकेशवर दत्त ने गुलामी की जंजीरों को मजबूत करने वाले, पूँजीपतियों की लूट को बदस्तूर जारी रखने एवं मुक्तिकामियों पर दमन-चक्र का पुख्ता इंतजाम करने वाले पब्लिक सेप्टी बिल, ट्रेड डिस्प्यूट बिल, पेपर सेडिशन एक्ट को पास होने से रोकने के लिए ही 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली एसेम्बली हॉल में बम फेंका था और देश के नौजवानों को जागृत करने तथा क्रांतिकारी संदेशों को पूरे देश में पहुंचाने के लिए पर्चे बाँटे और फेंके थे। कॉ. सिंह ने कहा कि देश की आजादी समझौतावादी धारा के नेताओं के नेतृत्व में मिली, जिसने आजादी के 64 वर्षो में आम-अवाम की जिन्दगी को तंगहाली-बर्बादी के मुहाने पर पहुँचा दिया है। आजादी के बाद केन्द्र व राज्यों में सत्तासीन हुई तमाम दलों की सरकारें देश की छाती पर भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण की जनविरोधी नीतियाँ और एक से बढ़कर एक जनविरोधी काले-कानून थोपती जा रही हैं। इससे शिक्षा-स्वास्थ्य, बिजली सहित तमाम मानवसुलभ सुविधाओं को इजारेदारों पूँजीपतियों के हवाले करती जा रहीं हैं। मुनाफे की लूट के आधार पर टिकी मरणासन्न पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने समाज में हर तरह का अभाव पैदा कर समाज से भाईचारा, मातृत्व, पितृत्व और भ्रातृत्व जैसी भावनाओं को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया है। आदमी सही मायने में इंसान न बन पाये, भूखे रहकर भी हक-अधिकार की खोज करने लायक मानसिकता का निर्माण न हो सके, इसके लिए अश्लील साहित्य-सिनेमा व विज्ञापनों के जरिये तेजी से संस्कृति पर भी हमला किया जा रहा है।

ऐसी विकट परिस्थिति में शहीदे आजम भगत सिह के संघर्षों एवं उनकी कुर्बानी को याद करना लाजिमी है। ऐसे वक्त में छात्र-नौजवानों को भगत सिंह, खुदीराम, बैकुंठ शुक्ल, योगेन्द्र शुक्ल, नेताजी सुभाष, राममोहन राय, विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, नजरूल इस्लाम जैसे शहीदों-मनीषियों के ऊंचे चरित्र, नीति-नैतिकता एवं मूल्यबोध से लैस होना ज्यादा जरूरी हो गया है क्योंकि उच्च चरित्र, नीति-नैतिकता एवं मूल्यबोध से सम्पन्न छात्र-नौजवानों में ही अन्यायपूर्ण व्यवस्था को पलटने की कूवत होती है और छात्र-नौजवानों को अपने अन्दर यह कूवत पैदा करने के लिए ज्ञान-पिपाशु होकर इतिहास के मनीषियों-क्रातिकारियों के जीवन संघर्ष को पढ़ना और आत्मसात करना होगा। आज हमारे सामने है शहीदे आजम भगत सिंह की क्रांतिकारी धारा को आगे बढ़ाने वाले महान मार्क्सवादी चिन्तनकार शिक्षक एवं पथ पथप्रदर्शक कॉ. शिवदास घोष का क्रांति एवं परिवर्तन के बारे में ठोस विचार जिसके आधार पर ही मौजूदा व्यवस्था को उलटने एवं सामाजिक परिवर्तन के तरीके का ठोस ज्ञान प्राप्त कर लोगों में जन चेतना फैलाते हुए पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की तैयारी में लग जाना और उसके लिए क्रांतिकारी संगठन को मजबूत करना ही आज के छात्र-नौजवानों का सबसे बड़ा दायित्व होगा।

एआईडीवाईओ के राज्य संजोयक कॉ. इन्द्रदेव राय, पवन कुमार यादव, झारखंड ऑल इंडिया डीएसओ के वरिष्ठ नेता कॉ. बिष्णुदेव गिरी, विरेन्द्र कुमार, संजय कुमार सिंह, शिक्षक इन्द्रदेव प्रसाद, श्री भगवान लाल पंजियार, संजित कुमार, दीपक कुमार ने भी संगोष्ठी को संबोधित किया। संगोष्ठी का समापन संस्कृतिकर्मी कॉ. नन्दू दास और कॉ. बिष्णुदेव गिरी द्वारा गाये गये गानों से हुआ।

खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम का विरोध

आरोनः सरकारों की जनविरोधी नीतियों और बजट 2012-13 के विरोध में एसयूसीआई(सी) की आरोन इकाई ने एक प्रदर्शन किया जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं, छात्र, नौजवान शामिल हुए। स्थानीय गुलाब गंज चौराहे पर किए गए प्रदर्शन में मुख्य रूप से खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम और बजट के जनविराधी प्रावधानों को कोसा गया। प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए स्थानीय प्रभारी मनीष श्रीवास्तव ने कहा कि सरकारों की जनविरोधी नीतियों का शिकार सभी हो रहे हैं। आम आदमी महंगाई की मार झेल ही रहा है। अब शासक देश में एफडीआई लाने और शॉपिंग माल खोलने की वजह से छोटे-छोटे व्यापारियों को भी खत्म करना चाहते हैं। इसका भार जनता पर पड़ेगा। इसीलिए जनता को भी मिलकर तीव्र आन्दोलन खड़ा करने की आवश्यकता है।

प्रदर्शन को सुनील जैन झण्डा, प्रमोद नामदेव एवं गोपाल नायक तथा सैयद मुलायम अली ने भी सम्बोधित किया। प्रदर्शन का संचालन सोनू शर्मा ने किया।

प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए स्थानीय प्रभारी कॉमरेड मनीष श्रीवास्तव

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing : 6 May, 2012

क्षेत्रीय पार्टियों को लुभाने की तथाकथित वामपंथियों की नीति की एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने आलोचना की

(पटना से प्रकाशित हिन्दुस्तान टाइम्स के 30 अप्रैल के अंक में एसयूसीआई(सी) के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का साक्षात्कार छपा था। उसी का हूबहू हिन्दी अनुवाद यहाँ छापा जा रहा है, अनुवाद की किसी भी त्रुटि की जिम्मेदारी हमारी है–संपादक स दृ)

मात्र चुनाव जीतने की खातिर क्षेत्रीय पार्टियों को लुभाने के वामपंथियों के गेम प्लान की तीव्र आलोचना करते हुए एसयूसीआई(सी) के पोलित ब्यूरो सदस्य कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा कि सीपीआई(एम) और सीपीआई का एकमात्र उद्देश्य है जैसे भी हो राज्य विधानसभाओं और लोकसभा में विधायकों और सांसदों की संख्या बढ़ाना।

दो सेमिनारों के अलावा एक पार्टी मीटिंग में यहाँ हिस्सा लेते हुए उन्होंने वाम मोर्चे (एलएफ) की नीति 'कोई आलोचना नहीं' की विशेष तौर पर आलोचना की। उन्हींने कहा, ''हम भी सीपीआई और सीपीआई(एम) के साथ 1967 और 1969 में वाम मोर्चे का हिस्सा थे लेकिन मतभेदों की वजह से इससे बाहर आ गए थे।'' उन्होंने आगे कहा कि वाम मोर्चे में जो अभ्यास जारी था वह एकता को मजबूत करने के लिए खुली बहस के लेनिनवादी सिद्धान्त के विपरीत था।

वाम और जनवादी ताकतों के बीच व्यापक एकता के वामपंथियों के कदम का समर्थन करते हुए चक्रवर्ती ने तर्क दिया कि ''इसका एक कोड ऑफ कन्डक्ट और न्यूनतम साझा स्वीकृत प्रोग्राम होना चाहिए।''

उन्होंने कहा, नहीं तो एआईएडीएमके और टीडीपी जैसी जनविरोधी क्षेत्रीय पार्टियों के साथ हाथ मिलाने का कोई मतलब ही नहीं है। उन्होंने इस बात पर हैरानी जताई कि वाम पार्टियों ने तीसरा मोर्चा बनाने के अपने पहले वाले विचार को छोड़ क्यों दिया। उन्होंने कहा कि वाम और जनवादी पार्टियों की जिस प्रकार की व्यापक एकता सीपीआई(एम) और सीपीआई चाह रही हैं एसयूसीआई(सी) उसके खिलाफ है, उन्होंने यह बात भी कही, ''बल्कि ऐसा प्रयास होना चाहिए जिससे कि वाम ताकतें सामने आ जाएं''।

'साझे दुश्मन के खिलाफ उच्चतर एकता' का आह्वान करते हुए चक्रवर्ती ने अपने साझे दुश्मन को परास्त करने के लिए 'एकता संघर्ष एकता' के रास्ते का अनुसरण करने की सलाह वाम पार्टियों को दी।

साम्राज्यवाद को पूँजीवाद की उच्चतम अवस्था करार देते हुए उन्होंने कहा, 'मौजूदा पूँजीवादी संकट 1930 की महामंदी से भी कहीं ज्यादा गहरा और व्यापक है, इससे निकलने का अब कोई रास्ता नहीं बचा है।'

14 मार्च का पार्लियामेन्ट अभियान : अमेरिका के अखबार वर्कर्स वर्ल्ड के पन्नों पर

अमेरिका की वर्कर्स वर्ल्ड पार्टी के मुखपत्र में गत 2 अप्रैल के अंक में फोटो सहित कॉमरेड हीदर कोट्टिन की निम्न रिपोर्ट छपी है :

''भारत की राजधानी दिल्ली में गत 14 मार्च को कार्ल मार्क्स के मृत्यु दिवस पर, एसयूसीआई(सी) पार्टी के लगभग एक लाख सदस्य समर्थक एक बहुत विशाल रैली में शामिल हुए। देश के लगभग सभी नगर–शहरों से हजारों हजार लोग इस रैली में शामिल होने आये थे। कई महीने पहले से ही एसयूसीआई(सी) पार्टी के सदस्यों ने व्यापक प्रचार और मांगपत्र पर असंख्य लोगों के हस्ताक्षर संग्रह का अभियान चलाया था। भारत सरकार को देश की जनता की मांगें पेश करने के लिए वे दूर दराज के गांवों से लेकर लगभग सभी शहरों से पहुंचे थे। देश के लगभग सभी लोगों तक पहुंचने के लक्ष्य से उन्होंने एक महीने से भी ज्यादा अर्से तक सैकड़ों मील रास्ता पार किया था।

बेरोजगारी, खाने–पीने की चीजों की बढ़ती महंगाई और परिवहन किराये में बढ़ोतरी, बच्चों और औरतों की खरीद–फरोख्त, निजीकरण व भ्रष्टाचार खत्म करने और सरकार व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कर्ताधर्ताओं के नापाक मनसूबों को नाकाम करने की मांग को लेकर 3 करोड़ 57 लाख लोगों द्वारा स्वहस्ताक्षरित मांगपत्र लेकर वे दिल्ली आये थे। रैली में मांग उठी कि शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था की सोचनीय स्थिति दूर की जाए।

रैली में भाग लेने आये इन विशाल संख्यक लोगों के रात को ठहरने के लिए जो बड़े–बड़े तम्बू लगाये गये थे बरसात से वे सब और खाना बनाने की जगह, पेय जल के आयोजन सहित सभी कुछ धराशायी हो गया। आयोजकों ने बताया, 'इसके बावजूद असुविधाओं को लेकर जरा भी कोई शिकायत नहीं सुनने को मिली। न तो वहां जमा हुए हजारों हजार लोगों का जोश–खरोश ठण्डा पड़ा और न ही नेता–कार्यकर्ता–स्वयंसेवकों के दृढ़ संकल्प में जरा भी कोई कमी आई।' बल्कि एसयूसीआई(सी) के सदस्यों का मानना है कि इस कठिन परीक्षा से क्रान्तिकारी तेज, चरित्र और भी निखर कर आयेगा। इस महा रैली में दिल्ली का राजपथ जाम हो गया था, आसपास के सैकड़ों लोग सड़कों पर उतर कर जुलूस में शामिल हो गये। लेकिन भारत के कारपोरेट मीडिया ने दिल्ली की महा रैली की खबर लगभग छापी ही नहीं यह कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

कॉमरेड चन्द्रलेखा दास आसाम राज्य कमेटी की नई सचिव

एसयूसीआई(सी) की आसाम राज्य कमेटी की नई सचिव के तौर पर पार्टी की स्टाफ सदस्य कॉमरेड चन्द्रलेखा दास का नाम आसाम राज्य कमेटी द्वारा प्रस्तावित किया गया है और केन्द्रीय कमेटी ने उसका अनुमोदन किया है। केन्द्रीय कमेटी आशा करती है कि राज्य कमेटी के सभी सदस्य और बाकी सब कॉमरेडों की तहेदिल से मदद से वे अपनी जिम्मेदारी काबिलियत के साथ निभाने में सक्षम होंगी।

नारी भ्रूण हत्या के खिलाफ एआईएमएसएस का विरोध प्रदर्शन

ढाई साल की लड़की नेहा आफरीन पर उसके खुद के बाप उमर फारूख द्वारा लड़के की चाह में अमानवीय जुल्म ढाए जाने से 11 अप्रैल को हुई उसकी मौत ने पूरे देश के ज़मीर को झकझोर दिया है। जलती सिगरेट के टोटों से पड़े दाग, पूरे बदन पर खरोंचे, मार से पड़े नील, मुँह में कपड़ा ठूँस देने की घटना और अन्त में सर को दिवार पर पटक देने से गर्दन के जोते टूट जाने से हुई बच्ची की दर्दनाक मौत आज के हमारे समाज में लड़कियों के प्रति नफरत को दर्शाती है। राष्ट्रीय लिंग–अनुपात में आई गिरावट हमारे समाज में मौजूद लिंग–भेद को साबित करती है।

इस नृशंस काण्ड के खिलाफ 17 अप्रैल को यूवीसीई अनुमनी एसोशिएसन, बैंगलौर में एक विरोध सभा की गई। कामकाजी महिलाओं, गृहणियों, छात्राओं ओर बहुत सारे लोगों ने इसमें शिरकत की। सभी ने लड़के लड़की के बीच इस भेदभाव से लड़ने का दृढ़ संकल्प लिया।

प्रदर्शनकारियों को एआईएमएसएस की महासचिव डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित किया। जब उन्होंने नन्हीं सी बच्ची आफरीन की दर्दनाक मौत को याद किया तो उनका गला रूंध गया। उन्होंने कहा कि पुरुष प्रधान समाज जो अपने उत्तराधिकारी के तौर पर सिर्फ लड़का चाहता है नारी भ्रूण हत्या और शिशु हत्या का मूल कारण हैं। उन्होंने मातृसत्तात्मक समाज से लेकर दासता, सामन्तवादी व्यवस्था और मौजूदा पूँजीवादी सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों में महिलाओं की दशा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विस्तार से बात रखी। उन्होंने यह भी कहा कि मातृ प्रधान समाज में महिलाओं की बड़ी कद्र थी। लेकिन आज के पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को घटिया और दूसरे दर्जे का नागरिक समझा जाता है। अब मौजूदा सामाजिक–आर्थिक हालात में आर्थिक संकट ने माँ–बाप को एक ही बच्चा पैदा करने के लिए मजबूर कर दिया है और स्वाभाविक पसंद लड़का है। लड़की को या तो गर्भ में मार दिया जाता है या पैदा होने के बाद। यह रवैया एक अस्वस्थ समाज की ओर ले जाएगा। नर–नारी दोनों ही गाड़ी के दो पहियों की तरह होते हैं और इसका असन्तुलन समाज में गड़बड़ी पैदा कर देगा। यह स्थिति तभी बदली जा सकती है जब इस देश में सभी समझदार और जनवादी सोच वाले लोग समाज के जनवादीकरण में हाथ बंटाएं। उनके अलावा सभा को जानी मानी स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. नन्दिनी देवी, एआईएमएसएस की राज्य सचिव कॉ. अपर्णा बीआर, एआईएमएसएस बैंगलौर की अध्यक्ष और राज्य उपाध्यक्ष कॉ. प्रतिभा कुमारी बीएस ने भी सम्बोधित किया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग. नई दिल्ली–5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी–70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली–35 से मुद्रित, दूरभाष: 011–25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com